

पेट के कैंसर पर आईआईटी में हुई स्टडी अमेरिकन जर्नल में प्रकाशित

स्टडी के मुताबिक कैंसर सेल हमारे प्रोटीन का यूज कर बढ़ते हैं



सिटी रिपोर्टर. इंदौर

पेट के कैंसर और इसके इलाज में दवाओं के बेअसर होने के क्रियाविधि को समझने के लिए आईआईटी इंदौर ने हाल ही में एक स्टडी की। इस स्टडी के मुताबिक हेलिकोबैक्टर पाइलोरी जीवाणु और एप्सटीन बार वायरस के को-इन्फेक्शन के दौरान पेट के कैंसर को बढ़ाने के लिए मनुष्य का ही एक प्रोटीन काम में आता है, जिसका नाम गनकैरिन है। महत्वपूर्ण बात यह है कि हेलिकोबैक्टर पाइलोरी जीवाणु और एप्सटीन बार विषाणु के को-इन्फेक्शन के कारण गैस्ट्रिक कैंसर के होने की समयावधि को 7 से 10 साल को घटाकर 2 से 5 साल कर देता है, जो कि इनके अकेले के संक्रमण की तुलना में बहुत कम है।

आईआईटी इंदौर की यह स्टडी अमेरिकन सोसायटी ऑफ माइक्रोबायोलॉजी के एमस्फीयर नाम के जर्नल में प्रकाशित की गई है। संस्थान के इन्फेक्शन बायो इंजीनियरिंग ग्रुप के प्रमुख डॉ. हेमचंद्र झा ने बताया कि प्रयोग के दौरान जब गनकैरिन जीन की कॉपी बनाकर गैस्ट्रिक सेल डाली गई तो कैंसर सेल्स मल्टीप्लिकेशन तेजी से बढ़ गया। इस जीन को हटाया तो पाया गया कि पेट की सेल्स की कैंसरस क्वालिटी बहुत कम हो गई। डॉ. हेमचंद्र झा ने अपने रिसर्च स्टूडेंट्स धर्मेन्द्र कश्यप, बुद्धदेव बरा और श्वेता जखमोला साथ सीएसआईआर-नार्थ ईस्ट इंस्टिट्यूट ऑफ साइंस एंड टेक्नोलॉजी, असम के डॉ. अनिल कुमार सिंह के साथ यह शोध किया।